आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ------- Date:03-02-15

हम भाग्यशाली आत्माओं को पतित से पावन बनने का और कर्मातित अवस्था प्राप्त करने का रास्ता बतलाने वाले, मुक्ति-जीवनमुक्ति दांता, बेहद के बाप ने कहा, मीठे बच्चे - तुम्हें अपार खुशी होनी चाहिए कि हम अभी पुराना कपड़ा छोड़ अपने घर, परमधाम जायेंगे फिर नया कपड़ा नई दुनिया, सतयुग के आरंभ में लेंगे.

भक्ति मार्ग में भी हम यह जानते तो है कि हम आत्मायें है, एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं. लेकिन आत्म-अभिमानी होकर पार्ट बजाना परमात्मा-बाप अभी हमें सिखलाते हैं. जब हम स्वयं को आत्मा समझे तो यह भी समझे की आत्मा तो अजड़-अमर-अविनाशी हैं. आत्मा ही अच्छे-बुरे कर्म करती हैं. आत्मा ही कर्म-बन्धन और कर्म-सम्बन्ध में भी आती हैं. आत्मा ही अच्छे-बुरे संस्कार ले जाती हैं. आत्मा ही सुख और दुख भोगती हैं. आत्मा ही पावन होती है फिर आत्मा ही ८४ जन्म ले पतित बनती हैं. अभी आत्माओं के पिता, परमपिता-परमात्मा स्वयं इस धरा पर आकर आत्माओं को पतित से पावन बनने का, जन्म-जन्मांतर के दुखो से मुक्त होने का और फिर २१ जन्म जीवन-मुक्ति में रहकर पार्ट बजाने का रास्ता बतलाते हैं. कलियुग में मनुष्यों को सबसे ज्यादा भय लगता है अपने शरीर को छोड़ने का. हम भाग्यशाली अलौकिक ब्राह्मण आत्माओं को स्वयं परमपिता-परमात्मा ने गोद लेकर, हमारे शरीर छूटने के भय से हमें सदा के लिए मुक्त कर दिया. क्योंकि हर ब्राह्मण आत्मा जानती है कि जब हमारा यह कलयुगी शरीर छूटेगा तो स्वयं परमपिता-परमात्मा, शिवबाबा ब्रह्मा के रथ में आकर हमें अपने नैनों पर बिठाकर साथ ले जायेगा और फिर हमारा सतयुग के आरंभ में पार्ट शुरु होगा.

आज भी कई बच्चे कंफ्यूज होते है की परमात्मा (शिवबाबा) विनाश क्यों करते है? परमात्मा ने आज की मुरली में ड्रामा में अपने पार्ट को स्पष्ट करते हुए कहा -- मैं आकर तुम बच्चों को पढ़ाता हूँ (यानी ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देते है). ड्रामा में विनाश की भी नूँध है, सो फिर भी होगा. मैं कोई फूँक नहीं मारता हूँ कि विनाश हो जाए. ये मूसल आदि बने है यह भी ड्रामा में नूँध हैं. परमात्मा विनाश नहीं कराता लेकिन ड्रामा अनुसार विनाश तो अपने आप ही होता है. नई सतयुगी दुनिया के रचयिता, ज्ञान सागर बाप, ड्रामा अनुसार, पुरानी दुनिया के विनाश से पहले इस धरा पर अवतरित होकर, नई दुनिया में पार्ट बजाने आने वाली आत्माओं को पतित से पावन बनने का, कर्मातित अवस्था को प्राप्त करने का रास्ता

बतलाते हैं. बाबा की आज की मुरली से बाबा की याद और ड्रामा में परमात्मा के पार्ट के बारे में कहे गये कुछ महा-वाक्यों को बाप की याद में रहकर पढ़ेंगे तो बाप को और ड्रामा को एक्यूरेट समझ पायेंगे.

- बाबा कहते हैं भक्ति में तुम कहते भी थे - हे पतित-पावन आकर हमको पावन बनाओ क्योंकि समझते हैं हम पतित बुद्धि हैं. बुद्धि भी समझती है कि यह आयरन एजड पुरानी दुनिया है. नई दुनिया को सतोप्रधान और पुरानी को तमोप्रधान कहा जाता है. तुम ने आधाकल्प भक्ति मार्ग में बहुत मेहनत की है अब धक्के खाकर थक गये हो. भगवान को पाने के लिए धक्के खाने की भी ड्रामा में नूँध हैं. भक्त भगवान को याद करते है क्योंकि भक्ति में दुख है, तो कहते है आकर हमारे दुख हरो, पावन बनाओ. तो अब ड्रामा अनुसार बाप आकर तुम्हें पावन बनने का रास्ता बतलाते हैं.

- बाबा कहते हैं भक्ति मार्ग में भक्त कहते भी है - राम-राज्य चाहिए परन्तु वह कब और कैसे होना है यह किसी को भी पता नहीं. भक्त की आत्मा अन्दर समझती भी है कि यह रावण राज्य है. भक्त के आंखों से भगवान के प्रेम में आँसू आते है लेकिन भगवान को जानते ही नहीं. जिसके प्रेम में आँसू आते है उनको जानना भी चाहिए ना. अब भगवान खुद आकर अपना परिचय देते है कि मैं कौन हूँ? मैं जो हूँ, जैसा हूँ ऐसा एक्यूरेट मुझे कोई जानते नहीं. मुझे जानना हो तो देही-अभिमानी बनना पड़े.

- बाबा कहते हैं तुम आत्मा हो. तुम ८४ जन्म भोग तमोप्रधान बनी हो. अभी तुम्हारी आत्मा को दिव्य बुद्धि का तीसरा नेत्र मिला है. आत्मा यह ज्ञान समझ रही हैं. बाबा तो ज्ञान का सागर है तो तुम बच्चों को सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान देते हैं. जो यह ज्ञान को अच्छी रिती पढ़कर स्वयं में धारण करते है वह ऊंच पद पायेंगे. बाप तुम बच्चों के लिए नया मकान (सतयुग) बना रहे है तो तुम्हारी बुद्धि भी कहती है कि जल्दी हम नये मकान में जाकर रहे. तो तुम्हें बहुत खुशी है कि अब हम यह पुराने कपड़े (शरीर) छोड नया जाकर लेंगे.

- बाबा कहते हैं तुम बच्चे जानते हो अब यह बेहद की घडी अपना चक्र पूरा करने को हैं. जब तुम कर्मातित अवस्था को पायेंगे फिर यहाँ नहीं रहेंगे. कर्मातित बनने के लिए अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना पड़े. जितना बाप को एक्यूरेट याद करेंगे उतना जल्दी कर्मातित अवस्था को प्राप्त करेंगे और उतना जल्दी सतयुग में पहले आयेंगे. ॐ शांति.